एकात्म भारत के लिए
सुरेंद्र मिश्रा द्वारा प्रकाशित

एकात्म भारत

जो एकात्म है वही भारत है

@EkatmaBharat
दैनिक एकात्म भारत

अश्विन शुक्ल पक्ष चतुर्थी
बुधवार विक्रम संवत् 2076

2-10- 2019, इंदौर
e-paper : www.ekatmabharat.com

भारत हिंदू राष्ट्र है, इस सच को कोई नहीं बदल सकता

सरसंघचालकजी मोहन भागवत बोले

नई दिल्ली

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने कहा है, 'भारत हिंदू राष्ट्र है। ये सत्य है। इसे कोई नहीं बदल सकता। इसे हमने नहीं बनाया है. ये तो सदा से चलता आया है। जब तक यहां एक हिंदू भी है, ये हिंदू राष्ट्र है. ये सत्य है. बाकी सब काल खंड और परिस्थिति के हिसाब से बदल सकता है।'

'द आरएसएसः रोडमैप्स फॉर 21 सेंचुरी' किताब का विमोचन करते हुए सरसंघचालक मोहन भागवत ने कहा कि यह किताब समाज को संघ दिखाएगी और संघ में चर्चा का विषय भी होगी। उन्होंने कहा, 'संघ पुस्तक से बंधा नहीं है लेकिन पुस्तकें दिशा तो दिखाती हैं, पुस्तक पढ़िए।' सरसंघचालक ने 'द आरएसएसः रोडमैप्स फॉर 21 सेंचुरी' किताब को संघ के बारे में गलतफहमी को दूर करने वाली किताब भी बताया। उन्होंने कहा कि इस किताब को पढ़ने से आपको संघ के बारे में गलतफहमी नहीं होगी। सरसंघचालक जी ने कहा, 'जो सब लोगों को जोड़कर रख सकता है, जो कहे हम हिंदू नहीं हैं, आप जो भी हैं, हमारे हैं, ये मानकर कि पूरा समाज समृद्ध बने, ये संघ है।' उन्होंने कहा, 'विचारों की स्वतंत्रता संघ में मान्य है। यहां अनेक मत होने के बाद भी मनभेद नहीं होता है।

सुनील आंबेडकर की किताब

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के काम करने के तौर-तरीकों को लेकर एक किताब 'द आरएसएस रोडमैप्स 21 सेंचुरी' लिखी है। सुनील आंबेडकर ने अपनी इस पुस्तक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के काम करने से तरीके से लेकर इसकी विचारधारा के बारे में लिखा है। उनका मानना है कि संघ 94 साल से समाज को सशक्त कर रहा है। संघ का विरोध करने से पहले इस संगठन को समझना आवश्यक है। इसके लिए मोहन भागवत ने भी विरोधियों से कम से कम दो वर्ष संघ में बिताकर देखने की बात कही।

रामलला विराजमान ने पूछा, क्या ईदगाह ध्वस्त करके मस्जिद बनी ?

चीफ जस्टिस ने मुस्लिम पक्ष से कहा- बार बार एक ही बात न दोहराएं

एकात्म भारत. दिल्ली

श्रीरामजन्मभूमि मामले की सुनवाई के दौरान मंगलवार को चीफ जस्टिस रंजन गोगोई से मुस्लिम पक्ष के वकील राजीव धवन को माफी मांगनी पड़ी। सुनवाई के दौरान रामलला विराजमान की ओर से सीएस वैद्यनाथन ने मुस्लिम पक्ष की दलीलों के उत्तर में दलीलें शुरू कीं। वैद्यनाथन ने शूट 4 (सुन्नी वक्फ बोर्ड) की याचिका का अंश पढ़ते हुए कहा कि इनका कहना है कि बाबरी मस्जिद सपाट जमीन पर बनाई गई थी, वहां पर कोई भी ईदगाह नहीं थी। अब मुस्लिम पक्ष कह रहा है कि वहां पर ईदगाह थी। उन्होंने पुरातात्विक खोज में मिली दीवार (नंबर 18) के मंदिर नहीं, ईदगाह की होने की मुस्लिम पक्ष की दलील खारिज कर दी और कहा कि मुस्लिम पक्ष कह रहा है कि 1528 से पहले वहां ईदगाह थी तो क्या यह माना जाए कि मुगलों ने इसे गिराकर मस्जिद का निर्माण किया? मुस्लिम पक्ष ने अपने वाद में खुद कहा है कि मस्जिद सपाट जमीन पर बनाई गई थी, लेकिन अब कह रहे हैं कि ईदगाह तोड़कर मस्जिद बनाई गई।

उनके यह कहने पर मुस्लिम पक्ष के वकील राजीव धवन ने कहा, ऐसा नहीं है। यह दीवार मंदिर का हिस्सा नहीं है। यह खुदाई में नहीं

निकली है। वैद्यनाथन ने कहा कि मुस्लिम पक्ष ने खुदाई में निकली एक लंबी दीवार को ईदगाह बताया, लेकिन न तो किसी गवाह ने इसकी बात कही ना ही आर्कियोलॉजिकल सर्वे ने ईदगाह की बात कही। मुस्लिम पक्षकारों ने ASI की छवि को धूमिल किया है।

धवन ने कहा, हमने 1961 में केस दाखिल किया था, हमें कैसे पता चलता? आज आप कह रहे हैं कि ईदगाह तोड़कर मस्जिद बनाई गई। ये तो नया मामला है। इसके बाद मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगई इस पर नाराज हो गए। मुस्लिम पक्ष के वकील राजीव धवन पर गुस्सा जाहिर करते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे सुनवाई नहीं चलेगी। मुस्लिम पक्ष के वकील उन्हें बार-बार वही चीज बता रहे हैं, जो पहले कह चुके हैं। क्या उन्हें लगता है कि बेंच अपने दिमाग का इस्तेमाल नहीं करती? इसके बाद धवन ने माफी मांगी और सुनवाई आगे बढ़ी। संविधान पीठ के समक्ष हिन्दू पक्ष की ओर से परासरण ने भगवद्गीता का श्लोक उद्धृत करते हुए कहा कि पापकर्म की बदनामी मृत्यु से भी निकृष्ट है। लोगों का अगर किसी भूमि स्थान पर अलौकिक शक्तिशाली और ऊर्जा होने का विश्वास और श्रद्धा है तो वह भी कानूनी व्यक्ति हो जाता है। यानी उसे संकट के समय अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए अदालत जाने का अधिकार है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि उन गुणों की घोषणा स्वयंभू है या किसी ने की है। हिन्दू सनातन दर्शन में तो पांच तत्व धरती, गगन, अग्नि, वायु और जल के साथ दर्शों दिशाओं की पूजा होती है। श्री देवी भू देवी भी पूजित हैं।

परासरण ने सुप्रीम कोर्ट से कहा कि चिदम्बरम मंदिर में शिव का लिंग नहीं है। वहां एक पर्दा है। पर्दा हटता है तो नटराज के दर्शन होते हैं। तमिलनाडु के समुद्रतट पर मयलापुरम में भी मंदिर तो है पर मूर्ति नहीं है। परासरन ने कुड्डालोर मंदिर का उदाहरण देते हुए कहा कि कुड्डालोर मंदिर में भी कोई मूर्ति नहीं है और केवल एक दिया जलता है जिसकी पूजा की जाती है। वैद्यनाथन ने मुस्लिम पक्ष द्वारा की गई बहस पर एक नोट कोर्ट में दिया। वैधनाथन ने कहा कि जब एक बार साबित हो गया कि वहां पर भगवान राम का जन्म हुआ था तो वहां पर किसी भी मूर्ति की जरूरत नहीं है।

गांधी जयंती पर विशेष

राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ से गांधी जी का दो बार साक्षात्कार

1934 के दिसंबर महीने में जमनालाल बजाज ने महात्मा गांधी को वर्धा आमंत्रित किया था। गांधी जिस दोमंजिला घर में ठहरे थे, उसके ठीक सामने एक विशाल मैदान था जो जमनालाल बजाज की ही संपत्ति थी। उन दिनों उस मैदान पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का शीतकालीन शिविर चल रहा था, जिसमें करीब पन्द्रह सौ स्वयंसेवक भाग ले रहे थे। लगभग एक सप्ताह तक महात्मा गांधी ने अपने कमरे से इन स्वयंसेवकों को अथक शारीरिक श्रम करते हुए देखा। उन्होंने देखा कि किस तरह अनुशासित तरीके से इन स्वयंसेवकों ने पूरे मैदान को साफ किया और तंबू लगाते हुए उसे एक विशाल और सुव्यवस्थित शिविर का रूप दे दिया। बताते हैं कि यह सब देखकर महात्मा गांधी को इस शिविर को निकट से देखने की इच्छा उत्पन्न हुई। उन्होंने महादेव देसाई से इसकी व्यवस्था करने को कहा. महादेव देसाई ने संघप्रमुख डॉ हेडगेवार के सहयोगी अप्पाजी जोशी से संपर्क किया और अप्पाजी जोशी ने तुरंत ही महात्मा गांधी को इस शिविर में आमंत्रित भी कर लिया। इस घटना का जिक्र आरएसएस के मुखपत्र 'पाञ्चन्जय' के पूर्व संपादक देवेन्द्र स्वरूप ने अपने एक लेख में किया है। अगले दिन यानी 25 दिसंबर, 1934 को सुबह 6 बजे ही महात्मा गांधी आरएसएस के शिविर में पहुंच गए। उन्होंने सबसे पहले रसोईघर का मुआयना किया और वहां बनने वाले भोजन और उसकी लागत के बारे में पूछा। बकौल स्वरूप, आरएसएस के उस शिविर में दो बातों ने महात्मा गांधी को खासकर प्रभावित किया था। पहली यह कि शिविर में गणवेश, भोजन और ठहरने का सारा प्रबंध और खर्च स्वयंसेवकों ने खुद ही वहन किया था। और दूसरी बात यह कि अस्पृश्यता तो दूर की बात, स्वयंसेवकों को आपस में एक-दूसरे की जाति मालूम तक नहीं थी। उस दिन डॉ हेडगेवार वहां उपस्थित नहीं थे, लेकिन अगले दिन वे स्वयं महात्मा गांधी से मिलने गए। संपूर्ण गांधी वाङ्मय में तो इस तरह की किसी घटना का जिक्र नहीं मिलता, लेकिन 13 साल बाद आरएसएस के स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए महात्मा गांधी ने स्वयं इस बात का जिक्र किया था। भारत-विभाजन के दौरान सांप्रदायिक उन्माद अपने चरम पर था और हर तरफ से खून-खराबे की खबरें आती रहती थीं। उस दौरान महात्मा गांधी के पास आरएसएस के बारे में भी शिकायतें पहुंचने लगीं। महात्मा का स्वभाव था कि वे कान के कच्चे नहीं थे। यानी वे केवल सुनी-सुनाई बातों पर तुरंत यकीन नहीं करते थे। यही कारण रहा होगा कि उन्होंने आरएसएस को नए सिरे से देखने-समझने और उसके स्वयंसेवकों से संवाद करने के लिए 13 साल बाद एक बार फिर 16 सितंबर, 1947 को आरएसएस स्वयंसेवकों की एक सभा में जाने का फैसला किया यहां महात्मा गांधी ने कहा था - 'बरसों पहले मैं वर्धा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक शिविर में गया था। उस समय इसके संस्थापक श्री हेडगेवार जीवित थे, स्वर्गीय श्री जमनालाल बजाज मुझे शिविर में ले गए थे और वहां मैं उन लोगों का कड़ा अनुशासन, सादगी और छूआछूत की पूर्ण समाप्ति देखकर अत्यंत प्रभावित हुआ था। तब से संघ काफी बढ़ गया है। मैं तो हमेशा से यह मानता आया हूं कि जो भी संस्था सेवा और आत्मत्याग के आदर्श से प्रेरित है, उसकी ताकत बढ़ती ही है।